* मतंग मुनि ने बृहद्देशीय ग्रंथ की रचना की
* बाणभट्ट ने हर्षचरित नामक ग्रंथ की रचना की

* नाटककार भवभूति राजपूत काल में हुए। | कवि एवं नाटककार थे। |

* 12वीं शताब्दी में गीत गोविन्द (संस्कृत ग्रंथ) की रचना संगीतज्ञ जयदेव ने की।
* नारदीय शिक्षा में श्लोकों की संख्या 238 है।
* वैदिक गायन की मूर्च्छना अवरोही थी।
* सामगायक, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र, क्रुष्ट एवं अतिस्वार इन सात स्वरों का प्रयोग करते थे।
* तैत्तिरीय शाखा को पढ़ने वाले द्वितीय, चतुर्थ, मन्द्र एवं अतिस्वार इन चार स्वरों का प्रयोग करते थे।
* नारद ने 20 पुरुष, 24 स्त्री और 13 नपुंसक राग माने हैं।
* संगीत मकरन्द में वीणा के 18 प्रकार प्राप्य हैं
* गायन समय को 3 भागों में रखा नारद ने
(1) प्रातःकालीन (2) सांयकालीन (3) मध्यकालीन